परिवर्तन क्यों नहीं हो रहा ?

जब भी आप किसी आत्मा के संपर्क में आते हैं, तो उस आत्मा से हमारी क्या बातचीत होती है, हम ज़्यादातर पूछते हैं, और क्या चल रहा है। तो सामने वाले का उत्तर होता है, बस ऐसे ही, यूँ ही चल रहा है। बस जीवन कुछ ऐसा ही है। इसका अर्थ यह हुआ कि उसको परिवर्तन चाहिए। परिवर्तन करने की शक्ति हमारी बातों में तो होनी चाहिए ना। व्यक्ति हमेशा उसी से मिलना चाहता है जिससे मिलकर उसे कुछ प्राप्ति हो, कुछ अनुभव हो, जो कहीं भी मिल नहीं रहा।

आप अगर किसी पेड़ को ध्यान से देखो, तो उसका तना, उसकी पत्तियाँ, उसके फूल यदि हरे-भरे हों तो उससे अंदाज़ा लग जाता है कि इस पेड़ को अर्थात् इसके बीज को बीच बीच में टाइम से खाद और पानी मिलता है। उसी प्रकार हम मनुष्यों की स्थिति है। हमारा बीज हमारी आत्मा है और हम सारी आत्माओं का बीज परमात्मा है। यदि बीज की शक्ति को बढ़ाया नहीं गया, अर्थात् उसे समझ का, ज्ञान का, कॉन्शियनेस का पानी नहीं मिला तो एक दिन वो सूख जायेगा। आपको भी पता है कि बीज के द्वारा ही तना और शाखाओं को बीच-बीच में पानी मिलता है। आज हम मनुष्य आत्मायें पूरी तरह से आशाहीन तथा अवसाद ग्रस्त हैं। कारण, कि आज हमें कोई ठीक से पानी देने वाला नहीं रहा।

आज सभी हर घड़ी सुख और चैन से जीना चाहते हैं। बेचैन हैं। सम्पत्ति और साधन होते हुए भी सुख और चैन की

नींद आँखों में नहीं है। कारण, सच्चा सुख और सच्ची शांति चाहिए, जिसके कारण वो रास्ता ढूंढ़ रहे हैं। इसको अगर थोड़ा साधारण शब्दों में कहें कि आज पूरे विश्व में अगर देखा जाए तो बहुत अच्छे-अच्छे वक्ता हैं, मोटिवेशनल ट्रेनर हैं, गुरू हैं, संत हैं, जिनसे ये सारी आत्मायें बीच-बीच में मिलती भी हैं, लेकिन इन लोगों की आवाज़ उन आत्माओं के दिल को नहीं छू पाती, क्यों, क्योंकि वो सिर्फ और सिर्फ बाह्य सम्पत्ति, बाहरी खज़ाने, बाहरी सुख आदि को पाने का रास्ता बताते हैं। इसीलिए किसी को संतुष्टि नहीं मिल रही।

साधनों की शक्ति तथा वाणी की शक्ति तो सबके पास है, लेकिन एक शक्ति है जो किसी के पास नहीं है, जो है संकल्प की शक्ति और वृत्ति की शक्ति, स्नेह और सहयोग की शक्ति। आज सभी मुख से तो अच्छी-अच्छी बातें बोलते हैं, लेकिन सबके भाव अलग होते हैं। क्योंकि जो व्यक्ति परिवर्तन करना चाहता है, उसके तीन आधार होते हैं। पहला, वो क्या बदले तथा क्यों बदले। दूसरा, क्या वो बदलना भी चाहता है। तीसरा, अगर वो बदलना चाहता है तो उसकी विधि क्या है। अब उपरोक्त तीनों बातों को समझने का आधार सिर्फ एक है, और वो है हमारा नज़रिया, उस व्यक्ति के प्रति हमारी वृत्ति, हमारा दृष्टिकोण। कहने का भाव यह है कि जब हम किसी को बदलने की बात करते हैं, कुछ बताना चाहते हैं, या उसको कुछ प्राप्ति कराना चाहते हैं, तो उसके पहले हमें अपने अंदर यह बहुत बड़ा परिवर्तन करना होगा कि हमारी वृत्ति, हमारी दृष्टि, हमारी कृति, हमारा कर्म उस आत्मा के प्रति क्या है, जब तक आप निःस्वार्थ भाव से शुभ भाव से अपनी बात उस आत्मा की उन्नति के लिए यथार्थ रूप से नहीं कहेंगे तब तक उस आत्मा को अपने आप को परिवर्तन करने का मन नहीं बनेगा। अर्थात् हम किसी व्यक्ति से जब बात करते हैं तो अपने बिलीफ सिस्टम के आधार से

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

बात करते हैं, अपने पूर्व अनुभवों के आधार से बात करते हैं, या उसके बारे में कहीं पढ़के या सुनके बात करते हैं। तो उनको वो वायब्रेशन्स सूक्ष्म रूप से पहुँच जाते हैं, और उन्हें पता चलता है कि ये बातें सिर्फ ऊपर ऊपर कह रहे हैं, इनका भाव बदलने का नहीं है। इसलिए सच में निःस्वार्थ सेवा न होने के कारण हम किसी भी आत्मा को परिवर्तन करने में आज असमर्थ हैं। हम सभी को बताते हैं, क्या क्या करना चाहिए, लेकिन हम किसी को ये नहीं बताते कि कैसे करना है। अगर हम इसे सार रूप में कहें तो कह सकते हैं कि परिवर्तन शक्ति का आधार हमारा नज़रिया, दृष्टिकोण, शुभ वृत्ति, मनोभाव होते हैं। ये हमारी सूक्ष्म शक्ति है, इससे हम किसी भी आत्मा को कम समय में बहुत सारी प्राप्तियाँ करा सकते हैं। लेकिन इसके लिए हमें परमात्मा द्वारा दिये गए स्वमानों का अभ्यास बहुत ज़रूरी है। तब परिवर्तन निश्चित है। ●

उपलब्ध पुस्तकें

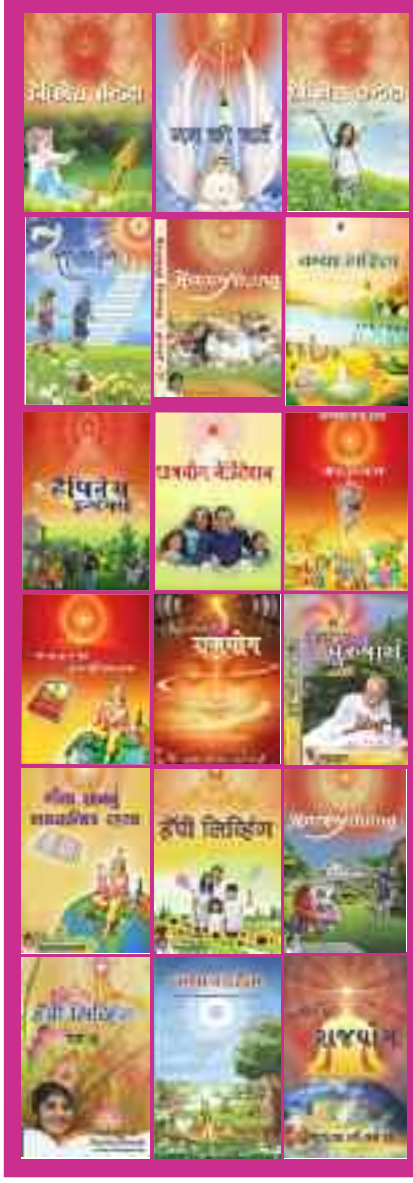

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न - मैं डाक्टर हूँ, मेरा अपना नर्सिंग होम है। बहुत व्यस्तता रहती है। योग-साधना नहीं हो पाती। कभी-कभी रात को भी जागना पड़ता है तो सवेरे भी उठा नहीं जाता। पैसा तो बहुत मिलता है पर सारा दिन आत्म ग्लानि सी बनी रहती है। क्या इसी दिनचर्या में अच्छी साधना हो सकती है?

उत्तर - आपको अपने कार्य को एन्जॉय करना है। मन को हल्का कर दें और इस विधि से सहज साधनाएं करें। जब भी कोई पेशेन्ट आपके सामने आता है, आपको तीन अभ्यास करने हैं। उसे आत्मिक दृष्टि से देखें व स्वयं को किसी भी स्वमान में रखें। सात दिन के सात स्वमान निश्चित कर लें। पेशेन्ट की बात सुनकर जब पर्चे पर दवाई लिखने लगो, उससे पूर्व ऊपर शिव बाबा से कुछ सेकण्ड कनेक्शन जोड़ो, फिर लिखो। इस तरह सारे केस सफल होंगे।

दो पेशेन्ट के बीच एक या दो मिनट का समय निकालो और उसमें अभ्यास करो - मैं लाइट हाउस, माइट हाउस फरिश्ता हूँ या मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ या मैं इष्ट देव हूँ और मेरे मस्तक तथा अंग-अंग से चारो ओर रंग-बिरंगी किरणें फैल रही हैं। इस तरह चाहे जितने भी पेशेन्ट आयें, आपको सब कुछ आनंददायी व खेल की तरह लगेगा।

जब आपको रात को जगाया जाता है तो सहज भाव से उठो, अपना काम करो और तब ही थोड़ा योग करके सो जाओ। यदि दो बजे के बाद जगाया जाता है तो काम के बाद आधा घण्टा योग करके नींद पूरी करो। नींद को कम करना कल्याणकारी नहीं रहेगा। इस विधि से आप सहज साधना करें। सोने से पूर्व दस मिनट अव्यक्त मुरली अवश्य पढ़ लिया करें। इस तरह आप आत्म-ग्लानि से भी मुक्त रहेंगे। प्रतिदिन दस मिनट अपने नर्सिंग होम में हीलिंग वायब्रेशन्स फैलायें। इसकी विधि है - कहीं भी बैठकर अभ्यास करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ व मुझ पर शिव परमात्मा की किरणें पड़ रही हैं व मेरे मस्तक से सारे नर्सिंग होम में फैल रही हैं। ऐसा करने से आपके पास जो भी पेशेन्ट आयेगा, वो उन वायब्रेशन्स में तुरंत ठीक हो जाएगा। कई मानसिक रोगी तो वहाँ आते ही ठीक हो जाएंगे।

प्रश्न - हम धन से यज्ञ में सेवा करते हैं परन्तु जब हम धन का सदुपयोग नहीं देखते तो संकल्प चलते हैं और सोचते हैं कि महायज्ञ में ही सेवा करें। कर्म की क्या गति है व कहाँ हमारा भाग्य ज़्यादा बनेगा? हम जानना चाहते हैं।

उत्तर - ये यज्ञ स्वयं भगवान ने रचा है। उसके कार्य में सहयोग करना - ये दिव्य बुद्धिवान मनुष्य का श्रेष्ठ भाग्य है। धन की सेवा एक तरह की सेवा है। आपने जब सेवा का संकल्प किया, तब से ही आपका भाग्य जमा हो गया। ये आपका अपना परिवार है। ईश्वरीय कार्य को अपना मानना - ये वारिस आत्मा की एक पहचान है।

आपने धन की सेवा की तो आपका भाग्य बन गया। इसके बाद आपको निर्संकल्प होना चाहिए। यदि आपको ये संकल्प चलता है कि मेरे धन का क्या किया या आप धन का हिसाब मांगते हैं तो आपका मेरापन खत्म नहीं हुआ। आपको ये याद है कि मैंने इतना दिया तो आपका भाग्य आधा हो जाता है। यदि आप बार-बार वर्णन करते हैं तो भाग्य कटता जाता है। देकर भूल जाना, गुप्त रखना -यही सर्वश्रेष्ठ भाग्य बनाने की विधि है। यह आभास भी न रहे कि मैंने किया। आपने दिया अब देवियों का काम है उसका उपयोग करना। इस बारे में आपको निर्संकल्प होना चाहिए। आपका तो भगवान के खज़ाने में जमा हो गया। धन की सेवा आप अपने सेवाकेन्द्र में भी करें व महायज्ञ में भी।

प्रश्न - मैं अधरकुमार हूँ। मुझे पवित्र बनने की बहुत इच्छा है, परन्तु माया बनने नहीं देती। मेरा योग भी नहीं लगता। विधि बताइये।

उत्तर - जन्म-जन्म की वासनाएं, अब मनुष्य को पवित्र नहीं बनने देती। भगवान को तो पवित्रता ही प्रिय है। उनकी आज्ञा है, काम महाशत्रु है। गीता में भी महावाक्य हैं - जो मनुष्य काम व क्रोध के वेग को सहन करने में समर्थ है, वही सच्चा योगी है। आपको योगी भी बनना है व पवित्र भी। दोनों का गहरा नाता है। बिना पवित्रता के कोई योगी नहीं बन सकता व बिना श्रेष्ठ योग के सम्पूर्ण पवित्रता का बल प्राप्त नहीं होता।

आपके केस में पहले आपको योगी बनना है। हम उसकी सहज विधि लिख रहे हैं। इससे आपमें पवित्र रहने की ताकत आ जायेगी।

सारे दिन में पच्चीस बार याद करना - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ व महान आत्मा हूँ। सवेरे उठते ही दस बार याद करना -मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मायाजीत हूँ, विजयी रत्न हूँ।

सारे दिन में दस बार एक-एक मिनट स्वयं को देह से न्यारा आत्मा समझना अर्थात अशरीरीपन का अभ्यास करना। भोजन खाते व पानी-दूध पीते उसे दृष्टि देकर सात बार संकल्प करना कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। भोजन बीस प्रतिशत कम करना। बस इस तरह शीघ्र ही आपमें पवित्रता धारण करने की शक्ति आ जाएगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

देखिए 'अपना DTH' में फ्री 24 घंटे 'पीस ऑफ माइंड चैनल' ...उसके साथ 100 अन्य चैनल भी फ्री
अपने डी.टी.एच. डिश के डायरेक्शन का करें परिवर्तन...
Satellite Position = 75° East, Satellite = ABS-2
LNB Frequency = 10600/10600, Frequency = 12226/12227
Polarization = H, Symbol = 44000
System = MPEG-2(DVB-S) / MPEG-4(DVB-S2)
FEC = 3/4, 22K = On/Auto, Mode = All/FTA
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104777111/7014140133